सुदूर ग्रामीण परिवेश में शिक्षा प्रणाली, आकांक्षा और सीख

एक ESRC-DFID- वित्त पोषित सहयोगात्मक शोध परियोजना (ES/N01037X/1)

ग्रामीण शिक्षा में नवाचार

शोध

यहां बताए गए निष्कर्ष 2 साल की अनुसंधान परियोजना पर आधारित हैं जो लेसोथो, भारत और लाओस के दूरदराज के ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा प्रणालियों और युवाओं की आकांक्षाओं के बीच के संबंधों की खोज करते हैं। तीन देशों में से प्रत्येक में, दो ग्रामीण समुदायों और उनके स्थानीय प्राथमिक विद्यालयों में 2017 में नौ महीने की अवधि तक मानव जाति विज्ञान संबंधी शोध किया गया था।

सितंबर 2018 नीति संक्षेप

2009 में पेश किये गये लेसोथो के नये 'एकीकृत पाठ्यक्रम', का लक्ष्य विद्यालुयीन शिक्षा के पहले 10 वर्षों की पाठ्य सामग्री और शिक्षाशास्त्र दोनों को मूल रूप से बदलना है। यह एक उपयोगी केस स्टडी है क्योंकि इन सुधारों में कुछ ऐसी चुनौतियों को हल करने की कोशिश की गई है जिन्हें हमने ग्रामीण लाओस, भारत और लेसोथो में अपने शोध के माध्यम से पहचाना है। मोटे तौर पर, नया पाठ्यक्रम इस कथन को कि शिक्षा एक निर्दिष्ट (औपचारिक क्षेत्र, शहरी) भविष्य की ओर ले जाती है को एक दुसरे पाठ्यक्रम से प्रतिस्थापित करने का प्रयास करता है, जिसमे बच्चों को स्वयं अपने भविष्य का वाहक माना गया है – जिसके तहत उन्हें, उनकी भौगोलिक परिस्थितियों के तहत, अपने जीवन और आजीविका की योजना बनाने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्रदान किया जाता है। हालाँकि, नए पाठ्यक्रम के परिणामस्वरूप, व्यवहारिक तौर पर बच्चों के शिक्षा के अनुभव अपेक्षा से कम रहे हैं, और वे अभी भी विद्यालयीन शिक्षा को ग्रामीण व्यवसायों के बजाय वेतनभोगी नौकरियों के साथ जोड़कर देखते हैं। यह शोध भारत, लाओस और अन्य जगहों पर भविष्य के पाठ्यक्रम में सुधार के लिए उपयोगी सबक प्रदान करता है।

सीखने के क्षेत्र

संयुक्त राष्ट्र और विश्व बैंक के समर्थन से लेसोथो के शिक्षा मंत्रालय द्वारा विकसित एकीकृत पाठ्यक्रम का लक्ष्य 'व्यक्तिगत और सामाजिक विकास के लिए शिक्षा देना और नागरिकों और राष्ट्र दोनों को वैश्विक दुनिया की बढ़ती चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाना ' है। (शिक्षा और प्रशिक्षण मंत्रालय, 2015)। यह पारंपरिक संकीर्ण शैक्षिक विषयों से हटकर व्यापक और अधिक कार्यात्मक विषय क्षेत्रों पर केंद्रित है। पिछले 14-विषयों वाले प्राथमिक स्कूल पाठ्यक्रम को घटाकर पांच 'सीखने योग्य क्षेत्रों में बाँट दिया गया है जो कि सैद्धांतिक रूप से 'व्यावहारिक जीवन की चुनौतियों' पर केंद्रित हैं। इनमें से एक 'रचनात्मकता और उद्यमशीलता', है जो स्पष्ट रूप से औपचारिक अर्थव्यवस्था में चल रही नौकरियों की कमी का एक समाधान है। विद्यालयीन शिक्षा को एक वेतनभोगी नौकरी के बजाय उद्यमशील भविष्य की तैयारी के रूप में पुनर्गठित किया जा रहा है।

कौशल विकास पर भी अधिक ध्यान केंद्रित किया गया है: पाठ्यक्रम को इस तरह तैयार किया गया है जिससे शिक्षार्थियों को तथ्यों की जानकारी हो और पूरे जीवन के लिए उपयोगी कौशल विकसित करने में मदद मिले '(कक्षा 7 ,शिक्षक मार्गदर्शिका)। शिक्षक मार्गदर्शिका में उल्लेखित कौशल में निर्णय लेना और समस्या को हल करना ('रचनात्मक सोचा समझा विकल्प लेना'), रचनात्मक सोच, रचनात्मकता, प्रभावी संचार (मौखिक और गैर-मौखिक), सिखने के लिए सीखना, सहकर्मी दबाव का प्रतिरोध और मना करने की कला, समालोचनात्मक सोच, तार्किक सोच और वैज्ञानिक कौशल शामिल हैं। इन्हें किसी व्यक्ति के भविष्य की योजना बनाने और परिस्थितियों का सामना करने के लिए आवश्यक कौशल के रूप में देखा जाता है, जो युवाओं को एक विशेष सफेदपोश नौकरी वाले भविष्य के बजाय व्यक्तिगत आकांक्षाओं को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

सीखने के क्षेत्र

भाषा विज्ञान और साक्षरता
(सेसोथो, अंग्रेजी, कला और शिल्प, नाटक, संगीत और अन्य भाषाएं - अनिवार्य विषय सेसोथो और अंग्रेजी)

संख्यात्मक और गणितीय
(गणित - अनिवार्य विषय गणित)

व्यक्तिगत, आध्यात्मिक और सामाजिक
(इतिहास, धार्मिक शिक्षा, स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा, विकास अध्ययन, जीवन कौशल -अनिवार्य विषय जीवन कौशल)

वैज्ञानिक और तकनीकी
(विज्ञान, भूगोल, कृषि विज्ञान, तकनीकी विषय - अनिवार्य विषय विज्ञान)

रचनात्मकता और उद्यमशीलता
(व्यावसायिक शिक्षा, गृह अर्थशास्त्र, आईसीटी - अनिवार्य विषय कोई भी)

शिक्षा शास्त्र

नए पाठ्यक्रम को नए तरीकों से पढ़ाया और मूल्यांकित किया जाना है। इसका उद्देश्य बच्चों (अब 'शिक्षार्थी' कहा जाएगा) की व्यक्तिगत प्रतिभाओं को विकसित करना है। शिक्षक मार्गदर्शिका अपेक्षित शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षाशास्त्र प्रस्तुत करता है जो 'स्टोरी लाइन', 'विचार-मंथन', 'नाटकीयता', 'रोल प्ले', 'संसाधन व्यक्ति का उपयोग' (स्कूल के बाहर से), 'सिद्धांतों को लागू करना' और 'अनुभवात्मक अधिगम' जैसे उपकरणों से युक्त है। इसके तहत, बहु-स्तरीय कक्षाओं को एक अवसर के रूप में देखा जाना चाहिए, और सकारात्मक अनुशासन के उपयोग द्वारा क्रम सुनिश्चित किया जाना चाहिए। शिक्षार्थियों को अपने स्वयं के शिक्षण और अपने स्वयं के भविष्य के साथ-साथ अन्य बच्चों की सहायता करने के लिए अधिक जिम्मेदारी लेनी चाहिए।

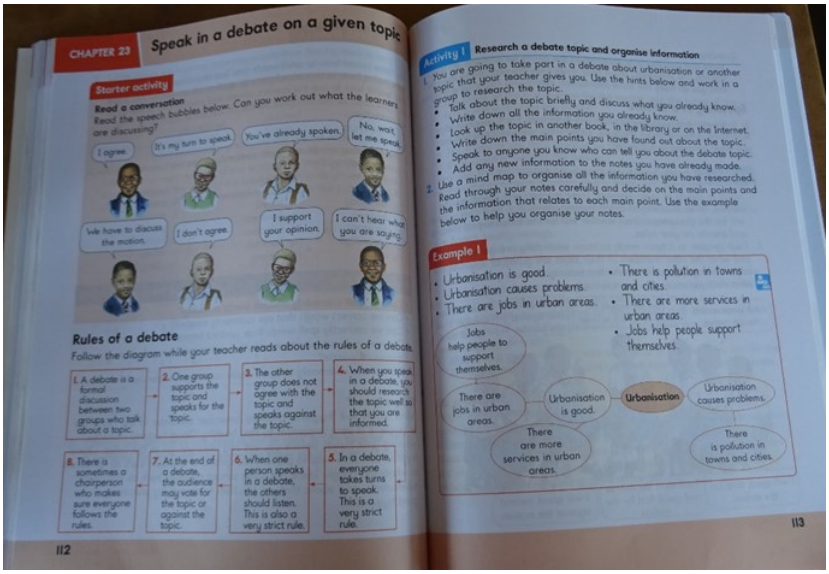

शिक्षार्थियों से शहरीकरण जैसे विषयों पर वाद-विवाद करने की अपेक्षा की जाती है

मूल्यांकन

वर्ष के अंत में ली जाने वाली परीक्षा को सतत मूल्यांकन से प्रतिस्थापित किया जा रहा है जो, केंद्रित, सहयोगी, विकासशील और त्वरित' है, जिसके परिणामस्वरूप बच्चों के लिए एक कक्षा से दूसरी कक्षा के बीच आने वाली बाधाओं को दूर किया जा सकता है। अकादमिक ज्ञान और समझ के साथ-साथ 'सॉफ्ट स्किल्स' में निपुणता दर्ज की जाती है। अतः, उदाहरण के लिए, वाद-विवाद के समय बच्चों को आत्म-सम्मान के लिए भी अंक दिए जाते हैं।

ऐसा माना जाता है कि शिक्षार्थियों का माध्यमिक स्कूलों में प्रवेश प्राथमिक विद्यालय (ग्रेड 7) के अंत में होने वाली राष्ट्रीय परीक्षाओं के बिना केवल उनके शैक्षणिक प्रदर्शन के आधार पर नहीं होना चाहिए। वह प्रतिस्पर्धात्मक प्रणाली अब नहीं रहेगी जिसके तहत प्रत्येक चरण में कमजोर छात्रों को बाहर कर दिया जाता है या 18-वर्ष के बच्चे को भी प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है, बल्कि यहाँ विद्यालयीन संरचना रैखिक रूप से बढ़ती है, जो एक निर्धारित भविष्य की दिशा में एक स्वचलित प्रगति का संकेत देती है।

ग्रामीण लेसोथो में एकीकृत पाठ्यक्रम लागू करना: शिक्षकों का दृष्टिकोण

हालांकि पाठ्यक्रम प्रभावशाली लगता है, इसका कार्यान्वयन इसकी महत्वाकांक्षाओं से कम है; शिक्षक सामग्री, शिक्षाशास्त्र और मूल्यांकन सिद्धांतों से असहमत हैं। वे शिकायत करते हैं कि पाठ्य सामग्री बहुत अधिक है (यह वास्तव में व्यापक है) और इसे पूरी तरह कवर नहीं किया जा सकता। कुछ तत्व तुच्छ प्रतीत होते हैं (चाय बनाने के बारे में कई पृष्ठ; शतरंज खेलने पर एक खंड)। इसके अलावा कुछ सामग्री को ग्रामीण बच्चों के जीवन से असंबद्ध माना जा रहा है। जैसा कि एक शिक्षक ने कहा: 'अगर मैं यहाँ से दूर ग्रामीण क्षेत्र में के बच्चों को पढ़ाता हूँ तो उन्हें यह भी नहीं पता है कि टेलीविजन क्या है, तो वे कंप्यूटर को कैसे समझेंगे!'

कुछ विषयों को अतिरिक्त संसाधनों के बिना प्रभावी ढंग से नहीं पढ़ाया जा सकता (बिजली के बिना एक स्मूथी बनाना)। शिक्षकों को यह भी शिकायत है कि उनके पास कई नए विषयों के प्रशिक्षण या बुनियादी ज्ञान की कमी है। नतीजतन, वे अपने शिक्षण को उनकी उस जानकारी तक सीमित रखते हैं – जो उन्हें पिछले पाठ्यक्रम में शामिल सामग्री से प्राप्त हुई है। बाहरी मूल्यांकन के बिना, पूरे पाठ्यक्रम को पढ़ाने का प्रयास करना अनावश्यक लगता है।

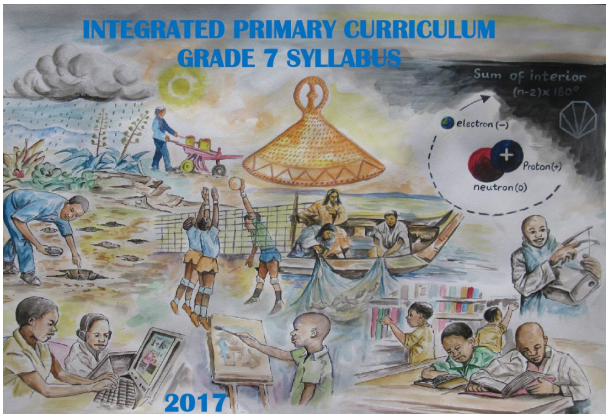

शिक्षाशास्त्र के संदर्भ में भी, शिक्षक वही पढ़ाते हैं जो वे जानते हैं। ब्लैकबोर्ड से कॉपी करने और खाली शब्दों को भरने में बहुत समय खर्च कर दिया जाता है। कुछ प्रश्न और उत्तर सत्र आयोजित हो सकते हैं, लेकिन कक्षा में वास्तविक विषयों पर चर्चा नहीं की जाती। शिक्षकों ने समूह कार्य का उपयोग करने के बारे में बात की और प्राथमिक स्कूलों में से दो में कभी-कभी समूह कार्य और वाद-विवाद की प्रक्रियाएं आयोजित किए गए। उदाहरण के लिए, बच्चों से कहा गया कि वे शब्दकोशों में शब्दों को खोजने के लिए एक साथ मिलकर समूहों में काम करें।

छात्रों के निरंतर मूल्यांकन को समय लेने वाली प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है जो उनके शिक्षण के लिए मददगार नहीं है। शिक्षकों को हर पाठ के सबक को सूचीबद्ध करना होता है और, जब अन्य शिक्षक अनुपस्थित होते हैं, उन्हें एक समय में कई कक्षाएं एक साथ लेना पड़ती हैं। सकारात्मक अनुशासन का उपयोग करने वाले आदेशों के बावजूद, शिक्षार्थियों को गलत उत्तर देने पर दंडित किया जाता है, जिसे कई शिक्षक अच्छे व्यवहार और समझ के लिए आवश्यक मानते हैं। शिक्षकों का विशेष रूप से यह मानना है कि मूलभूत सामग्री को समझे बिना अगली श्रेणी में पदोन्नत करने से शिक्षार्थी नई पाठ्य सामग्री को भी अच्छी तरह सीख नहीं पाएंगे।

बहु-स्तरीय शिक्षण, सतत् निगरानी और अपेक्षाकृत कम प्रशिक्षण या तैयारी के अभाव में, ग्रामीण स्कूलों द्वारा नए पाठ्यक्रम को पूरी तरह से लागू नहीं करना कोई आश्चर्य नहीं है।

वैकल्पिक भविष्य के लिए शिक्षा? सुधार की सीमाएँ

नए पाठ्यक्रम में बच्चों के भविष्य को बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। शैक्षिक विषयों की पाठ्यपुस्तकों में कई पृष्ठ पर व्यवसायों को दर्शाया जाता है, उद्यमिता पर एक अलग 'शैक्षिक विषय' है और बच्चों को योजना और लक्ष्य निर्धारण सिखाया जाता है। हालांकि पढ़ाने का तरीका विरोधाभासी है। पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों में संदर्भित व्यवसाय औपचारिक क्षेत्र वाले, वेतनभोगी हैं। उद्यमशीलता और व्यावहारिक विषयों पर पाठ्यक्रम के गहन ध्यान देने के बावजूद शिक्षक, नर्स, पुलिस अधिकारी और सैनिक अन्य कामों से कम प्रचलित नहीं हैं। वैकल्पिक ग्रामीण व्यवसाय, जैसे कि पशुपालन, कभी-कभी ही दिखाई देते

27. विभिन्न करियर के फायदे और नुकसान का वर्णन कीजिये	**संकल्पनाएं** विभिन्न करियर के भले और बुरे पहलु: शिक्षण नर्सिंग पुलिस डॉक्टर बाल काटने की दुकान **कौशल** जानकारियां एकत्रित करना निर्णय लेना आलोचनात्मक सोचना आत्मा जागरूकता **मूल्य और अभिवृत्ति** जागरूकता प्रशंसा आदर	शिक्षार्थी विभिन्न प्रकार के करियर को संशोधित करते हैं शिक्षक एक शिक्षक होने के फायदे और नुकसान बताते हैं शिक्षार्थी विभिन्न प्रकार के करियर के फायदे और नुकसान के बारे में जानकारी एकत्रित करते हैं शिक्षक और शिक्षार्थी विभिन्न प्रकार के करियर के फायदे और नुकसान के बारे में चर्चा करते हैं शिक्षक और शिक्षार्थी साथ में काम करने की जगह का भ्रमण करते हैं शिक्षार्थी विभिन्न करियर का रोल प्ले करते हैं	विभिन्न करियर के फायदे और नुकसान के बारे में जानकारी इकट्ठा करना विभिन्न करियर के फायदे और नुकसान का वर्णन करना विभिन्न करियर के रोल प्ले करना	शिक्षक मार्गदर्शिका

कक्षा 6 के पाठ्यक्रम में करियर, 2015

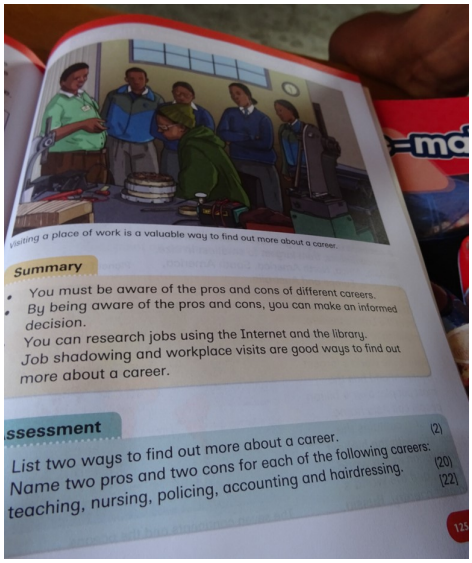

ग्रामीण परिस्थितियों में यह कार्य अव्यावहारिक हो सकते हैं

हैं। इसके अलावा, आम तौर पर इस बात की बहुत कम व्याख्या होती है कि किस व्यवसाय को किस तरह प्रारंभ किया जाए।

समान रूप से, हालांकि पाठ्यक्रम में प्रमुख करियर दिखाई देते हैं, शिक्षार्थियों ने बताया कि उन्हें बहुत कम करियर मार्गदर्शन मिलता है। इसके बजाय शिक्षक परीक्षा में आने की संभावना वाले उन विषयों पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं जिससे प्राथमिक स्कूल के बच्चों को अगली कक्षा में जाने में मदद मिलेगी।

हमारे शोध के समय, पूरी प्राथमिक प्रणाली में नया पाठ्यक्रम लागू कर दिया गया था, इसलिए हम नए और पिछले पाठ्यक्रम के बीच बच्चों की आकांक्षाओं की तुलना नहीं कर सके। हम शायद इस बात का अंदाजा लगा सकते हैं कि उद्यमिता शिक्षा किस प्रभाव और पूर्णता के साथ प्रदान की गई है। पांच शिक्षण क्षेत्रों में से एक में नाममात्र ध्यान होने के बावजूद, उद्यमिता को शायद ही कभी अलग से पढ़ाया गया था, शायद इसलिए कि इसे दोपहर के भोजन के बाद सिखाया जाता था जब, उदाहरण के लिए, बारिश के कारण स्कूल की छुट्टी हो जाती थी या शिक्षक जल्दी घर चले जाते थे। एक प्राथमिक स्कूल कक्षा की समीक्षा की गई जो भविष्य की योजना बनाते हुए, लक्ष्य निर्धारण पर केंद्रित थी। शिक्षार्थियों से लक्ष्य निर्धारण और प्रेरणा को परिभाषित करने की उम्मीद की गई थी, जिसे ब्लैकबोर्ड पर एक ट्रेन के चित्र के साथ चित्रित किया गया था जिसे पटरी से नहीं उतरना चाहिए। लेसोथो में ट्रेनों की लगभग पूर्ण अनुपस्थिति को देखते हुए, यह अवधारणाएं बहुत अमूर्त रहीं और छात्रों के लिए यादगार नहीं बन पाईं।

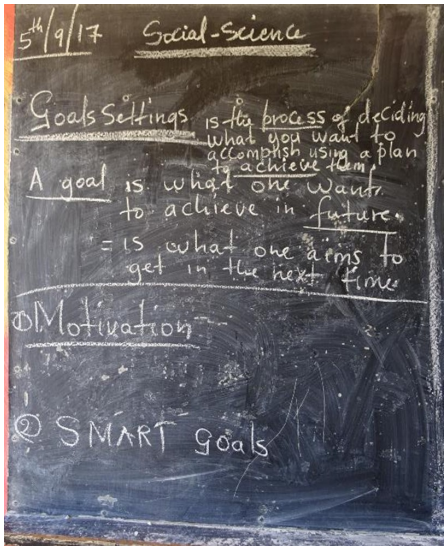

इस तरह के शिक्षण का संदेश नवउदारवादी विचार को जन्म देता है कि व्यक्ति स्वयं अपने भविष्य का वाहक है, इसके निर्धारण और अपने भाग्य के लिए स्वयं जिम्मेदार हैं (आधुनिकतावादी दृष्टिकोण के विपरीत – दीर्घकालिक रोजगार के साथ परिस्थितियों के अनुसार काम करना)। यह युवाओं की भलाई के लिए जोखिम भरा हो सकता है क्योंकि इसका अर्थ यह भी है कि उनकी विफलता का कारण उनके व्यक्तिगत प्रयासों का अभाव या चरित्र की कमी है।

शिक्षक ने इससे एक अभ्यास विकसित किया जिसके तहत उन्होंने बच्चों को व्यवसाय के संभावित लाभों, विशेष रूप से पशुपालन, पर विचार करने के लिए सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया। पाठ के अंत में शिक्षक ने छात्रों से कमरे में ही उनकी पसंद के व्यवसाय वाले कोने में जाने के लिए कहा, जहाँ शिक्षक, नर्स, पुलिस और व्यवसाय के लिए अलग अलग कोने आवंटित किए गए थे। व्यवसाय का कोना सबसे छोटा था जिसमें बस एक बैंक टेलर और कार मैकेनिक का व्यवसाय ही शामिल किया गया था।

स्कूल के बाहर, एक अन्य अवसर पर, हमने तीन बच्चों को एक ऐसा दृश्य प्रस्तुत करने के लिए कहा, जिसमें स्कूल के प्रिंसिपल ने स्कूल की समय सारिणी से रचनात्मकता और उद्यमिता को हटाने का फैसला किया हो। उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए लम्बे परिदृश्य में इस शिक्षण क्षेत्र की सामग्री के किसी भी मूल्य के प्रति उनकी जागरूकता का संकेत नहीं मिला। प्रिंसिपल का किरदार निभाने वाले बच्चे ने तर्क दिया कि विषय को हटाकर सिर्फ हाई स्कूल में ही पढ़ाया जाना चाहिए, क्योंकि यह बच्चों को यह समझ में नहीं आता है। दूसरी ओर शिक्षार्थी का अभिनय करने वाले बच्चे ने तर्क दिया कि विषयों में कटौती नहीं की

जानी चाहिए, बल्कि इसे पहले ही शुरू कर दिया जाना चाहिए, क्योंकि वे उपयोगी साबित हो सकते हैं, भले ही वे तुरंत समझ में न आएं।

बच्चे छोटे स्तर के व्यवसाय में संलग्न होने के प्रति अपरिचित या पूरी तरह से अनिच्छुक नहीं हैं। वे आत्मनिर्भर बनने में सक्षम होने या स्वयं का व्यवसाय करने की बात करते हैं, और आय उत्पन्न करने के अनगिनत तरीकों का हवाला दे सकते हैं। शोध के अंत में, हमने कक्षा 6 और 7 के छात्रों की एक कक्षा से पूछा कि अगर वे अपनी शिक्षा पूरी करने के तुरंत बाद नौकरी नहीं पाते हैं तो वे क्या कर सकते हैं। सुझावों में शामिल हैं, नैनी बनना, घर बनाना, सब्जियां बेचना, बीयर, ऊन और बकरी के बाल बेचना, पैसों के बदले में नाचना, सूअर, झाड़, कपड़े, शहद, मुर्गियाँ बेचना, जूते की मरम्मत करना, पेड़ लगाना, पुशुपालन, मक्का की बोरियाँ बनाना या स्कूल की वर्दी सिलना और बहुत सारे। विचारों को तेजी से उत्पन्न करने और स्पष्ट करने की उनकी क्षमता नए पाठ्यक्रम की सामग्री और शिक्षाशास्त्र से संबंधित हो सकती है, लेकिन वे शिक्षा को इन व्यवसायों की तैयारी के रूप में नहीं देखते हैं।

हालांकि उन्होंने व्यवसायों की परिकल्पना जीवित रहने के लिए बैक-अप के रूप में की, लेकिन कुछ बच्चों ने व्यवसायी बनने की आकांक्षा व्यक्त की। अधिकांश ने कल्पना की कि व्यवसाय शुरू करना जोखिम भरा होगा। एक माध्यमिक स्कूल की लड़की ने चोरी के जोखिम के कारण अनिच्छा व्यक्त की। शिक्षकों ने भी, पाठ्यक्रम के बावजूद, शिक्षार्थियों के लिए औपचारिक करियर के बारे में सोचा, क्योंकि यह एक निश्चित आय सुनिश्चित करता है। निस्संदेह, बच्चों और उनके शिक्षकों दोनों ने इन नौकरियों को अनौपचारिक क्षेत्र के काम की तुलना में उच्च दर्जा दिया था। कई छात्रों को इससे 'गंदे हाथों' से बचने की उम्मीद थी। अप्रत्याशित रूप से, शिक्षार्थियों के दृष्टिकोण से, शिक्षा को मुख्य रूप से अकादमिक अध्ययन और औपचारिक क्षेत्र करियर की एक सीमित श्रृंखला के रूप में देखा जाता है। शिक्षा को औपचारिक करियर के वाहक के रूप में देखना उन शिक्षार्थियों के लिए हानिकारक है जिनके लिए यह हमेशा एक भ्रम रहा है।

अनुशंसाएँ

ग्रामीण युवाओं द्वारा शिक्षा को औपचारिक क्षेत्र के करियर की एक संकीर्ण सीमा से परे भविष्य निर्माण के रूप में देखने के लिए:

⇒ बच्चों को वैकल्पिक संभावित भविष्य के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु शिक्षकों का समर्थन किया जाना चाहिए।

⇒ वक्ताओं को आमंत्रित किया जाना चाहिए जो उदाहरण स्वरूप अपने आजीविका के अनुभवों के बारे में ग्रामीण बच्चों को इस तरह से बताएं जो उन्हें 'वास्तविक' लगे ।

⇒ जब पाठ्यपुस्तकों को संशोधित किया जाता है, तो गैर-वेतनभोगी आजीविका और भावी कैरियर के अवसरों पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए जो ग्रामीण बच्चों के लिए बड़ी संख्या में सुलभ हों।

एक ESRC-DFID- वित्त पोषित तीन वर्षीय सहयोगी शोध परियोजना (ES/N01037X/1)

www.education-aspiration.net

ई-मेल nicola.ansell@brunel.ac.uk

/Education-Systems-and-Aspiration

@edn_aspiration

शोध समूह

लेसोथो

प्रो. निकोला अंसेल, ब्रुनेल विश्वविद्यालय

डॉ. क्लेयर डन्जी, ब्रुनेल विश्वविद्यालय

डॉ. पुलेन लेफोका, सेंटर फॉर टीचिंग एंड लर्निंग, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ लेसोथो

भारत

डॉ. पैगी फ्रॉयरर, ब्रुनेल विश्वविद्यालय

डॉ. अर्शिमा दोस्ट, ब्रुनेल यूनिवर्सिटी

श्री मुनिव शुक्ला, ग्राम मित्र समाज सेवा संस्थान, छत्तीसगढ़

लाओस

डॉ. रॉय हुइज्समेन्सु, आईएसएस, इरास्मस विश्वविद्यालय रॉटरडैम

श्री सिवोंगसे चांगपिटिकौं, आईएसएस, इरास्मस विश्वविद्यालय रॉटरडैम

सुश्री जोडी फोंसेका, प्लान इंटरनेशनल, लाओस

सर्वेक्षण

प्रो इयान रिवर्स, स्ट्रैथक्लाइड विश्वविद्यालय

Research jointly supported by the ESRC and DFID